RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

वर्ष - 12, अंक - 6 जनवरी-फरवरी 2024

Bharatiya Jyotisham
भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

विषय - सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	ज्योतिषशास्त्र के अनुसार नक्षत्रसाधन विमर्श	डॉ. अशोक थपलियाल	04
2.	स्थानबल साधन	डॉ. अनिल कुमार	16
3.	कालापानी : भारत - नेपाल सीमा विवाद	आलोक कुमार सौरभ सिंह डॉ. सत्यपाल सिंह	23
4.	ऑनलाइन शिक्षण द्वारा प्रदान शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. मोहन लाल 'आर्य'	28
5.	भारतीय चिन्तन परम्परा तथा काव्यशास्त्रों में अभिधा	डॉ. कृष्ण चन्द्र पण्डा	32
6.	शिक्षक-शिक्षा में सीखने की शैलियों का महत्त्व	डॉ. राजकुमारी गोला	36
7.	माध्यमिक स्तर पर कार्यरत् प्रधानाध्यापकों की प्रशासनिक प्रभावशीलता का अध्ययन	गौरव कुमार डॉ. मोहन लाल 'आर्य'	41
8.	मिडिल स्टेज पर अध्ययनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन	उमरा इदरीस डॉ. राजकुमारी गोला	45
9.	क्या भारतीय बाजार में पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए केंद्रीकृत सार्वजनिक खरीद प्रणाली समय की आवश्यकता है?	डॉ. नमिता जैन	49
10.	मनोविज्ञान का संज्ञानात्मक स्वरूप और अधिगम	डॉ. कालिका प्रसाद शुक्ल	54
11.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और उच्चशिक्षा का पुनर्गठन	डॉ. अनूप कुमार पाण्डेय	58
12.	समय की सार्थकता एक विवेचन	डॉ. अर्चना कुमारी	63
13.	वैदिकसाहित्य में पंचमहाभूतों का अभिचिन्तन	डॉ. मोहिनी अरोरा	65

ISSN 2278 - 0327

मिडिल स्टेज पर अध्ययनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन

उमरा इदरीस
शोध छात्रा, शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र.)

डॉ. राजकुमारी गोला
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र.)

सारः

आकांक्षा स्तर एक ऐसा भाव है। जो किसी भी विद्यार्थी को उसके भविष्य में क्या करना है कैसे करना है उसके उपलक्ष में उसके प्रबल भाव को अपने अंदर बनाए रखने से है। विद्यार्थी अपने आने वाले भविष्य में क्या बनना चाहता है क्या करना चाहता है वह अपने भविष्य को किस प्रकार जीना चाहता है। उसे सब को पूरा करने के लिए जो एक भाव एक विद्यार्थी या व्यक्ति के मन में होते हैं उसे हम आकांक्षा स्तर का नाम दे सकते हैं। विद्यार्थी हो या कोई भी उसके जीवन की नींव जो रखी जाती है वह किस प्रकार रखती है वह किस प्रकार रखी जाएगी उसे सब को हम आकांक्षा स्तर से ही तय कर सकते हैं विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर ही यह दर्शाता है कि उसके जीवन की नीव धनात्मक मानसिकता के साथ रखी गई है या नकारात्मक मानसिकता के साथ रखी गई है यही धनात्मक मानसिकता उसके आकांक्षा स्तर को अच्छा बनाती है और उसको आगे भविष्य में अच्छा काम करने में सहायता प्रदान करती है जिससे उसका भविष्य उज्जवल हो सकता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि किसी भी विद्यार्थी का जीवन उसके भविष्य को उपचारों रूप से चलने के लिए सबसे बड़ा योगदान उसके आकांक्षा स्तर का होता है किसी भी विद्यार्थी का आकांक्षा स्तर जिस प्रकार का होगा उसी प्रकार का उसका भविष्य भी तय किया जा सकता है यदि कोई अच्छा आकांक्षा स्तर रखता है उसके अंदर भविष्य के प्रति प्रबल भाव है तो उसका भविष्य भी उज्जवल होगा इसकी पूरी पुष्टि की जा सकती है।

बीजक शब्दः सामान्य विद्यार्थी, विकलांग विद्यार्थी, मानसिकता, व्यावसायिक आकांक्षा स्तर , उज्जवल भविष्य।

प्रस्तावनाः

जैसा कि देखा जा सकता है कि जब कोई भी नव शिशु जब इस संसार में जन्म लेता है तब से उसका शारीरिक व मानसिक विकास शुरू हो जाता है और यह विकास निरंतर होता रहता है। जब बच्चा खुद को समाज व संसार की चीजों के साथ हल्के-हल्के समायोजित कर लेता है उसके बाद वह अपने भविष्य के बारे में विचार करना शुरू कर देता है। जब एक बच्चा विद्यालय में प्रवेश लेता है तो वह खुद को उसे समझ में समावेशित करता है जब वह विद्यालय में प्रवेश लेता है तो उसके ज्ञान में निरंतर विकास होने लगता है और जब निरंतर उसका विकास होता जाता है तब वह मानसिकता के विकास में निरंतर बढ़ता रहता है तभी उसे विद्यार्थी के जीवन में आकांक्षा स्तर के जैसे भाव उत्पन्न होते हैं आकांक्षा स्तर एक ऐसा भाव कहा जा सकता है जो विद्यार्थी अपने भविष्य को सुचारू रूप से चलने के लिए वह अपने भविष्य को अच्छा बनाने के लिए जो भी काम करता है वह पहले से ही अपने मां के भावों के साथ करने लगता है और उसे पर निरंतर कार्य करने लगता है किसी भी व्यक्ति या विद्यार्थी का आकांक्षा स्तर जितना प्रबल होता है उसके वर्तमान के कार्य करने की क्षमता भी उतनी ही प्रबल होती है। यदि किसी व्यक्ति के उसके भविष्य के प्रति अच्छे विचार हैं वह उसके कार्य इतनी प्रबल व इतनी मेहनत के साथ किए जाने वाले हैं तो उसके भविष्य को अच्छा होने की संभावना अधिक बढ़ जाती है और यही अपने भविष्य को अच्छा करने के लिए एक प्रबल कार्य और प्रबल मन से किया गया कार्य को ही हम आकांक्षा स्टार कहा जा सकता है। सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थी यह दोनों अलग-अलग प्रकार के विद्यार्थी देखने को मिलते हैं किसी भी विद्यालय में और यह माना जाता है कि सामान्य और विकलांग विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में बहुत ही अंतर होता है। जिसका मुख्य कारण इस प्रकार भी समझा जा सकता है सामान्य विद्यार्थी तो अपने भविष्य को सुचारू रूप से चलने के लिए खुलकर विचार कर सकते हैं वह किसी भी दोस्त से प्रेरित नहीं होते वह शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ माने जाते हैं जिससे वह किसी भी कार्य को करने के लिए संपूर्ण रूप से स्वस्थ होते हैं तो वह अपनी आकांक्षा स्तर को इस प्रकार सोचते हैं कि वह जो चाहे वह अपने भविष्य में बन सकते हैं और उसके लिए वह अच्छे से कार्य कर सकते हैं। चसंदजे विद्यार्थी अपनी सोच व विचार को अपनी विकलांगता के चलते सीमित ही रखते हैं इन सब से विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर बहुत ही प्रभावित होता है और जब की देखा जाए कि

विकलांग विद्यार्थी हो या सामान्य विद्यार्थी वह दोनों ही खुल के अपने भविष्य के विचार रख सकते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्वः

इस शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व पर विचार किया जाए तो यह देखा जा सकता है कि इस शोध अध्ययन की बहुत ही आवश्यकता है जिसे हम एक विकलांग और सामान्य विद्यार्थियों के आकांक्षा स्टार का अच्छे से अध्ययन कर सकते हैं और उनके प्रति छुपे कारण को भी जाने का ज्ञान हासिल कर सकते हैं यह माना जाता है कि सामान्य विद्यार्थियों का आकांक्षा स्टार बहुत ही प्रबल होता है जैसे-जैसे एक विद्यार्थि का विकास हो जाता है वैसे-वैसे उसकी मानसिक विकास में भी वृद्धि होती रहती है सामान्य विद्यार्थी अपने इच्छा के अनुसार भविष्य को चुनते हैं और उसे पर निरंतर कार्य करते रहते हैं सामान्य विद्यार्थी अपने आकांक्षा स्तर को पूरा करने के लिए निरंतर अभ्यास करते रहते हैं और उसकी एक दिन हासिल भी कर लेते हैं। यदि दूसरी तरफ देखा जाए तो विकलांग विद्यार्थी जो किसी न किसी शारीरिक व मानसिक दोष से प्रेरित होते हैं वह अपने अंदर विद्यमान दोष पर नजर डालकर अपनी आकांक्षा स्टार में प्रबलता नहीं ला पाते। उनको कभी-कभी ऐसा भी प्रेरित होता है कि वह अपने भविष्य में ज्यादा कुछ नहीं कर पाएंगे उनमें एक नकारात्मक सोच उत्पन्न हो जाती है परंतु ऐसा कुछ भी नहीं है विकलांग विद्यार्थी अपने जीवन में बहुत कुछ कर सकते हैं वह जो अपने भविष्य में बनना चाहे वह बन सकते हैं विकलांग विद्यार्थियों को भी सामान्य विद्यार्थियों की तरह एक प्रबल आकांक्षा स्तर रखनी चाहिए यदि भूतकाल में देखा जाए तो हमारे देश में ऐसे बहुत से महान व्यक्ति रहे हैं जो किसी न किसी रूप से शारीरिक व मानसिक दोष से ग्रस्त थे। परंतु उनका प्रबल आकांक्षा स्तर के चलते वह अपने भविष्य में एक महान व्यक्ति बनकर निकले जिन्हें आज देश में ही नहीं संसार में भी बहुत लोग एक महान व्यक्ति के रूप में जानते हैं परंतु उन लोगों ने अपनी विकलांगता को कभी भी अपने भविष्य में वह जो बनना चाहते थे उसे सपना के बीच में बांधा के रूप में कभी नहीं आने दिया। इसी प्रकार हम यह मान सकते हैं कि विकलांग विद्यार्थियों को भी सामान्य विद्यार्थियों के समान एक अच्छी वह प्रबल आकांक्षा स्तर रखना चाहिए जिससे दोनों ही प्रकार के विद्यार्थियों का जीवन उज्जवल हो सके विकलांगता दोष के साथ-साथ बहुत कुछ सिखाती भी है और नए-नए कार्य करने के लिए प्रेरित भी करती है।

शोध समस्या कथनः मिडिल स्टेज पर अध्यनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन

शोध अध्ययन में प्रस्तुत शब्दों का पारिभाषिकरणः

सामान्य विद्यार्थीः- ऐसे विद्यार्थी जो शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक किसी भी प्रकार से पूर्ण रूप से स्वस्थ होते हैं।

विकलांग विद्यार्थीः- ऐसे विद्यार्थी जिनमे किसी भी प्रकार का शारीरिक दोष पाया जाता है या मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं होते।

शारीरिक विकासः- शारीरिक विकास से तात्पर्य इस प्रकार है कि मनुष्य के शरीर का पूर्ण रूप से विकास हुआ हो और किसी भी प्रकार की कमी नहीं हो।

व्यावसायिक आकांक्षा स्तरः-किसी भी विद्यार्थी को उसके भविष्य में जो भी कार्य करने के लिए उसके मन में जो भी प्रबल भाव होते हैं उसे हम आकांक्षा स्तर कह सकते है।

शोध अध्ययन के उद्देश्यः -

प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देष्य निम्नांकित निर्धारित किये गये है-

1. सामान्य एवं विकलांग छात्रों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
2. सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
3. शहरी क्षेत्र के सामान्य तथा विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
4. ग्रामीण क्षेत्र के सामान्य तथा विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐंः-

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रमुख परिकल्पनाऐं निम्नांकित निर्धारित की गयीं है-

1. सामान्य एवं विकलांग छात्रों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. शहरी क्षेत्र के सामान्य तथा विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. ग्रामीण क्षेत्र के सामान्य तथा विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन विधिः-

किसी भी शोध कार्य को वैज्ञानिक ढंग से पूर्ण करने के लिए अनुसंधान की विधि की आवश्यकता होती है। अनुसंधान विधि का निर्धारण समय के स्वरूप व प्रकृति को ध्यान में रखकर किया जाता है। प्रस्तावित शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक अनुसंधान का एक प्रकार आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करना उचित लगेगा। इसलिए शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया है।

शोध अध्ययन का सीमांकनः इस प्रस्तुत शोध अध्ययन में सहायता प्राप्त मिडिल स्टेज के विद्यालय में अध्यनरत कक्षा 8 के विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्याः

परिकल्पना परीक्षण संख्या 1: ''सामान्य एवं विकलांग छात्रों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सामान्य एवं विकलांग छात्रों के आकांक्षा स्तर के सन्दर्भ में तुलनात्मक निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पना का परीक्षण किया गया है। इस संबंध में तालिका संख्या 1 प्रस्तुत हैः

तालिका संख्या -1

मिडिल स्टेज पर सामान्य एवं विकलांग छात्रों का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर

परिगणित मूल्य	छात्रों के प्राप्तांक	
	सामान्य	विकलांग
माध्य	53.71	50.77
प्रमाप विचलन	7.74	10.76
विद्यार्थियों की संख्या	228	113
माध्य अन्तर	2.94	
माध्य का प्रमाप विभ्रम	1.13	
टी-मूल्य	2.58	
सारणी मूल्य	1.96	
सर्थकता	5.58 >1.96 (सार्थक)	
शून्य परिकल्पना	अस्वीकृत	

परिकल्पना परीक्षण के लिए सामान्य एवं विकलांग छात्रों के आकांक्षा स्तर के प्राप्तांकों के माध्य अंक अलग-अलग ज्ञात करके उनके बीच टी-अनुपात ज्ञात किया गया है। तालिका संख्या 1.1 से स्पष्ट है कि सामान्य छात्रों के औसत प्राप्तांक 53.71 तथा विकलांग छात्रों के औसत प्राप्तांक 50.77 हैं। दोनों का माध्य अन्तर 2.94 है। माध्य अन्तर का प्रमाप विश्भम 1.13 है। परिगणित टी-अनुपात 2.58 है जो कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य 1.96 से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक है। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई है।

परिकल्पना परीक्षण संख्या -2: ''सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के आकांक्षा स्तर के सन्दर्भ में तुलनात्मक निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पना का परीक्षण किया गया है। इस संबंध में तालिका संख्या 2 प्रस्तुत हैः

तालिका संख्या -2

मिडिल स्टेज पर सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर

परिगणित मूल्य	छात्राओं के प्राप्तांक	
	सामान्य	विकलांग
माध्य	51.34	49.69
प्रमाप विचलन	7.74	5.85
विद्यार्थियों की संख्या	202	57
माध्य अन्तर	1.65	
माध्य का प्रमाप विभ्रम	0.95	
टी-मूल्य	1.74	
सारणी मूल्य	1.96	
सर्थकता	1.74 > 1.96 (निरर्थक)	
शून्य परिकल्पना	स्वीकृत	

परिकल्पना परीक्षण के लिए सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के आकांक्षा स्तर के माध्य अंक अलग-अलग ज्ञात करके उनके बीच टी-अनुपात ज्ञात किया गया है। तालिका संख्या 4.06 से स्पष्ट है कि सामान्य छात्राओं के औसत प्राप्तांक 51.34 तथा विकलांग छात्राओं के औसत प्राप्तांक 49.69 हैं। दोनों का माध्य अन्तर 1.65 है। माध्य अन्तर का प्रमाप विभ्रम 0.95 है। परिगणित टी-अनुपात 1.74 है जो कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य 1.96 से कम है। अतः अन्तर निरर्थक है। शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई है।

परिकल्पना परीक्षण संख्या -3: ''शहरी क्षेत्र के सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। शहरी क्षेत्र के सामान्य एवं शहरी क्षेत्र के विकलांग विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के सन्दर्भ में तुलनात्मक निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पना का परीक्षण किया गया है। इस संबंध में तालिका संख्या 3 प्रस्तुत हैः

तालिका संख्या -2

मिडिल स्टेज पर शहरी क्षेत्र के सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर

परिगणित मूल्य	विद्यार्थियों के प्राप्तांक	
	सामान्य	विकलांग
माध्य	50.87	47.60
प्रमाप विचलन	7.99	9.50
विद्यार्थियों की संख्या	215	49
माध्य अन्तर	3.27	
माध्य का प्रमाप विभ्रम	1.49	
टी-मूल्य	2.24	
सारणी मूल्य	1.96	
सर्थकता	2.24 > 1.96 (सार्थक)	
शून्य परिकल्पना	अस्वीकृत	

परिकल्पना परीक्षण के लिए शहरी क्षेत्र के सामान्य विद्यार्थियों एवं शहरी क्षेत्र के विकलांग विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के प्राप्तांकों के माध्य अंक अलग-अलग ज्ञात करके उनके बीच टी-अनुपात ज्ञात किया गया है। तालिका संख्या 4.07 से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के सामान्य विद्यार्थियों के औसतप्राप्तांक 50.87 तथा शहरी क्षेत्र के विकलांग विद्यार्थियों के औसत प्राप्तांक 47.60हैं। दोनों का माध्य अन्तर 3.27 है।

माध्य अन्तर का प्रमाप विभ्रम 1.46 है।परिगणित टी-अनुपात 2.24 है जो कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य1.96 से कम है। अतः अन्तर सार्थक है। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई है।

परिकल्पना परीक्षण संख्या -4ः ''ग्रामीण क्षेत्र के सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' ग्रामीण क्षेत्र के सामान्य विद्यार्थियों एवं ग्रामीण क्षेत्र के विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर के सन्दर्भ में तुलनात्मक निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पना का परीक्षण किया गया है। इस सम्बन्ध में तालिका संख्या 4 प्रस्तुत है-

तालिका संख्या -4

मिडिल स्टेज पर ग्रामीण क्षेत्र के सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर

परिगणित मूल्य	विद्यार्थियों के प्राप्तांक	
	सामान्य	विकलांग
माध्य	54.31	51.55
प्रमाप विचलन	7.26	9.14
विद्यार्थियों की संख्या	215	121
माध्य अन्तर	2.76	
माध्य का प्रमाप विभ्रम	0.97	
टी-मूल्य	2.86	
सारणी मूल्य	1.96	
सर्थकता	2.86 > 1.96 (सार्थक)	
शून्य परिकल्पना	अस्वीकृत	

परिकल्पना परीक्षण के लिए ग्रामीण क्षेत्र के सामान्य विद्यार्थियों एवं ग्रामीण क्षेत्र के विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर के प्राप्तांकों के माध्य अंक अलग-अलग ज्ञात करके उनके बीच टी-अनुपात ज्ञात किया गया है। तालिका संख्या 4.08 से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के सामान्य विद्यार्थियों के औसत प्राप्तांक 54.31 तथा ग्रामीण क्षेत्र के विकलांग विद्यार्थियों के औसत प्राप्तांक 51.55 हैं। दोनों का माध्य अन्तर 2.76 है। माध्य अन्तर का प्रमाप विभ्रम 0.97 है। परिगणित टी-अनुपात 2.86 है जो कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य 1.96 से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक है। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई है।

शोध अध्ययन का निष्कर्षः उपरोक्त अध्ययन के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सामान्य एवं विकलांग छात्रों के आकांक्षा स्तर में अन्तर है। माध्य प्राप्तांकों की स्थिति के आधार पर दूसरे शब्दों में. सामान्य छात्रों का आकांक्षा स्तर विकलांग छात्रों से श्रेष्ठ हैं। वही सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के आकांक्षा स्तर में अन्तर नहीं है। दूसरे शब्दों में, सामान्य एवं विकलांग छात्राओं का आकांक्षा स्तर एक समान है। तथा शहरी क्षेत्र के सामान्य विद्यार्थियों एवं शहरी क्षेत्र के विकलांग विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में अन्तर है। दूसरे शब्दों में, शहरी क्षेत्र के सामान्य विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर शहरी क्षेत्र केविकलांग विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर से अच्छा है। और ग्रामीण क्षेत्र के सामान्य विद्यार्थियों एवं ग्रामीण क्षेत्र के विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में अन्तर है। दूसरे शब्दों में, ग्रामीण क्षेत्र के सामान्य विद्यार्थियों का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर ग्रामीण क्षेत्र के विकलांग विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर से श्रेष्ठ है क्योंकि सामान्य विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर प्राप्तांकों का औसत विकलांग विद्यार्थियों की तुलना में उच्च है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः-

- अरोड़ा, रीता (2005); ''शिक्षा में नव चिन्तन'', जयपुरः शिक्षा प्रकाशन।
- अग्निहोत्री, रविन्द्र (2007); ''आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याऐं एवं समाधान'', जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- भट्टाचार्य, जी0 सी0 (2005); ''अध्यापक शिक्षा'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- दुबे, श्यामाचरण (2005); ''भारतीय समाज'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ-126।
- लाल एवं पलोड़ (2007); ''शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग'', मेरठः आर0 लाल बुक डिपा।
- प्रसाद, देवी (2001); ''शिक्षा का वाहनः कला'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ-68,।
- पाण्डेय, राम शुक्ल (2007); ''शैक्षिक नियोजन एवं वित्त प्रबन्धन'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, पृष्ठ-105, 115, 116, 124।
- शर्मा, रजनी एवं पाण्डेय, एस0 पी0 (2005); ''शिक्षा एवं भारतीय समाज'', तयपुरः शिक्षा प्रकाशन, पृष्ठ 128-129।
- सुखिया, एस0 पी0 (2005); ''विद्यालय प्रशासन एवं संगठन'', मेरठः आर0 लाल बुक डिपो।

क्या भारतीय बाजार में पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए केंद्रीकृत सार्वजनिक खरीद प्रणाली समय की आवश्यकता है ?

डॉ. नमिता जैन
Assistant Professor, School of Law
JECRC University Jaipur (Raj.)

सारांश

यह लेख भारत में वर्तमान सार्वजनिक खरीद प्रणाली का आकलन करने के उद्देश्य से लिखा गया है। हाल के बदलावों और सिस्टम में मौजूद समस्याओं पर भी चर्चा की गई है। इस प्रणाली में कई मुद्दे हैं जो पारदर्शिता की कमी, भ्रामक कानूनों और व्यापक अनियमितताओं के कारण उत्पन्न हुए हैं। प्रशिक्षित पेशेवरों की अनुपलब्धता इस समस्या को बढ़ाती है। हाल के बदलावों ने सिस्टम को काम करने में थोड़ा आसान बना दिया होगा। लेकिन फिर भी, सिस्टम सही से बहुत दूर है। बड़े पैमाने पर और कठोर परिवर्तन की आवश्यकता है। ऐसा ही एक बदलाव केंद्रीकृत सार्वजनिक खरीद प्रणाली का आह्वान है। इससे पूरी प्रक्रिया पर सरकार का नियंत्रण बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। जब हम सरकार के बढ़ते नियंत्रण के बारे में बात करते हैं, तो हमें एक निवारण प्रणाली के लिए मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। इसलिए, भारत को शिकायत निवारण की एक बेहतर और नई प्रणाली शुरू करने की आवश्यकता है। इस लेख में उस हिस्से को भी शामिल किया गया है।

***कुंजी शब्द:** बाजार, निष्पक्षता, वित्त, खरीद*

परिचय

मानव समाज के विकास के बाद से, लोगों के दिन-प्रतिदिन के जीवन में सरकार के कामकाज में अचानक वृद्धि हुई है। इससे कल्याणकारी सरकार की अवधारणा का विकास हुआ है। कल्याणकारी सरकार की प्रतिक्रिया सार्वजनिक खरीद प्रणाली की अवधारणा का विकास रही है। एक अच्छी तरह से काम करने वाली और कुशल सार्वजनिक खरीद प्रणाली सरकार को अक्षमता, भ्रष्टाचार और अपव्यय जैसी समस्याओं का सामना करने में मदद करती है। सरकार के कामकाज में तेजी से विकास के बावजूद, भारत में सार्वजनिक खरीद प्रणाली में बहुत कम बदलाव हुआ है। यह कई कमजोरियों से ग्रस्त है। सामान्य शब्द में सार्वजनिक खरीद का अर्थ है सार्वजनिक सरकार द्वारा वस्तुओं और सेवाओं की खरीद। वर्तमान समय में, यह वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 15% से अधिक है। भारत में 2019 तक, हमारे सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 30% सार्वजनिक खरीद गतिविधियों में खपत हो रहा था।

जब कोई बड़े पैमाने पर सार्वजनिक खरीद पर खर्च की जा रही राशि पर विचार करता है, तो भारत अभी भी एक अनिवार्य केंद्रीकृत प्रणाली को लागू करने में सक्षम नहीं है। कई देशों में ये कानून या केंद्रीकृत प्रणालियाँ हैं जो सरकार को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करती हैं।

सार्वजनिक खरीद सोसायटी पर नियंत्रण

भारत में, सार्वजनिक खरीद की प्रक्रिया बहुत जटिल है क्योंकि सार्वजनिक सेवा वितरण का संघीय ढांचा मौजूद है। पूरी व्यवस्था के विभिन्न दल या सदस्य हैं। प्रक्रिया और प्रणाली में सार्वजनिक उपक्रमों, संघ और राज्य सरकार, स्वायत्त और वैधानिक निकायों और स्थानीय सरकार यानी पंचायत के बीच व्यवस्था शामिल है। अन्य देशों के विपरीत, भारत में इस प्रणाली को विनियमित करने वाला कोई कानून नहीं है। बल्कि, सिस्टम को सामान्य वित्तीय नियमों (जीएफआर) द्वारा नियंत्रित किया जाता है[1]। ये जीएफआर सरकारी निकायों को एक दूसरे से पूरी तरह से स्वतंत्र खरीद गतिविधियों का संचालन करने की अनुमति देता है। भारत में सार्वजनिक खरीद प्रणाली का ढांचा 4 व्यापक विशेषताओं पर आधारित है। ये विशेषताएं संवैधानिक प्रावधान, विधायी प्रावधान, प्रशासनिक और पर्यवेक्षक हैं।

अनुच्छेद 298,299, 300 और 300A के तहत संविधान सरकारों को वस्तुओं और सेवाओं के लिए अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के लिए अधिकृत करता है[2]। राज्य और केंद्र सरकारों के कर्तव्यों या शक्तियों को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 246 द्वारा विभाजित किया गया है[3]। अनुच्छेद 282 सार्वजनिक खर्च के मामले में वित्तीय स्वायत्तता की बात करता है। इसके अलावा, इससे निपटने के लिए कोई संवैधानिक प्रावधान नहीं है।

ऐसे कई कानून हैं जो भारत सरकार ने पारित किए हैं जो सिस्टम को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। अनुबंध अधिनियम 1872[4]